

Editorial Preface

Language is difference, says Derrida. Words grow, language grows, much as peoples or civilisations: by splitting from existing matter; by *differentiating* from catch-all phrases and overburdened signifiers. Homer called the sky 'bronze-coloured' because the Greeks had not yet perceived subtle differences in the tints of dawn. The Anglo-Saxons used the word 'apple' for any and all fruits until the Norman French brought the word 'fruit' along with many new varieties, forcing the word 'apple' to simply signify one such variety. One thus need not subscribe to a Sapir or a Whorf to posit a connection between the growth and health of a language and the discernment and complexity of the people possessing it. Will a child, for instance, appreciate the subtle difference in emotional state communicated by the words sober and sombre or serious and solemn, before learning those words? But in the globalized world of today, the standardised (and simplified) global koine of American (or American 'English', if you insist), often takes the place of native languages and literatures. Children grow up sampling various languages but knowing none. Anglophone Indians, particularly, possess a melange of languages at a purely functional level, but are not acquainted with *literary* language at all, as they hardly ever engage with Indian literature. This survival of ancient languages at a ghostly and superficial level has set in train what we may call the *simplification* of the Indian mind.

To resist this phenomenon, the Department of Language and Literature at Alliance University is starting this humble publication to celebrate and popularise the intricate texture of Indian (and foreign) languages, starting with the most widely spoken variety, Hindi. Do not be discouraged if you find literary language difficult to fully grasp. Merely making the effort to follow this webzine, we believe, will help you recover those feelings, emotions, and states of mind lost to the gradually vanishing richness of language.

Dr. Anirudh Sridhar
HOD Language & Literature

संपादकीय

भाषायी समाज के रूप में हिन्दी की सत्ता एक सामाजिक यथार्थ है जिसे इतिहास चक्र ने बोलियों के वंशानुक्रम के संबंध का अतिक्रमण कर एक निश्चित अर्थवत्ता प्रदान की है। इसका कारण है – भाषा का, हमारी सामाजिक अस्मिता का सशक्त माध्यम होना। भाषा एक समाज के लोगों को भावना, चिंतन और दर्शन की दृष्टि से परस्पर जोड़ती है, और 'मैं' का 'हम' समुदाय के विस्तार का साधन बनती है। यही नहीं सामाजिक अस्मिता के रूप में भाषा का सिद्ध होना ही उसे समाज को तोड़ने-जोड़ने की शक्ति देता है क्योंकि यह एक साथ अपनी 'आभ्यंतर एकता' और 'बाह्य विशिष्टता' दोनों को साधती है तो वहीं दूसरी ओर यह क्षेत्र, विविध क्षेत्रीय समाज के रूप में एक विशिष्ट इकाई भी सिद्ध होता है। भारतीय बहुभाषिक संदर्भ भाषा के माध्यम से एक ओर क्षेत्रीय रंग लाने के साथ समुदाय विशेष की भावात्मक एकता और अन्य समुदायों से उसका विद्वेष दोनों को ही सिद्ध करता है जिसके कारण यही भाषा शिक्षित-अशिक्षित, स्त्री-पुरुष, उच्च-मध्य-निम्न वर्ग आदि सभी को जोड़ या उकसा सकती है। इस कड़ी में साहित्य की अतूलनीय भूमिका होती है। साहित्य संवेदना के धरातल पर मानव को जोड़कर उन्हें उचित-अनुचित का बोध कराती है साथ ही आत्मचिंतन और शोधन की ओर उत्प्रेरित करते हुए अंततः एक सुनिश्चित दिशा प्रदान करती है।

आज साहित्य और भाषा नये तकनीकी के माध्यम से नव्य स्वरूप सहित पाठकों के संसर्ग में है। उसी का एक माध्यम है पत्रिका। पत्रिका का कलेवर और विषय सामग्री परिवर्तित समय के साथ बदलता रहा है। देश भर में कई साहित्यिक और राजनीतिक अथवा औद्योगिक पत्रिकाओं का अपना विशिष्ट स्थान उनके अपने क्षेत्र में है। अलायंस विश्वविद्यालय के भाषा और साहित्य विभाग की ओर से प्रकाशित 'अनुकर्ष' (त्रिभाषी, त्रैमासिक ई – पत्रिका) का सार्थक उद्देश्य इस बात में निहित है कि इसके माध्यम से भाषाओं का प्रचार – प्रसार व्यापक रूप में हो सके। हिन्दी, अङ्ग्रेजी और अन्य भाषा को संवर्धित करने का लक्ष्य लिए इस पत्रिका को सफलता तभी मिलेगी जब लेखक, अनुसंधाता, पाठक, शोधार्थी और छात्रों का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। सितंबर में प्रारम्भ होने के खातिर 'अनुकर्ष' का प्रवेशांक हिन्दी में आ रहा है। अंक में जितने भी लेख संकलित हैं उन सभी लेखकों और कवियों का सादर धन्यवाद। पत्रिका को अखिल स्तर पर स्थापित करने में पाठकों के सुझाव की प्रतीक्षा रहेगी।

डॉ. अनुपमा तिवारी

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी